कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय का अध्ययन

Dr. Ashok Kumar,
Assistant Professor,
Vivekananda College of Education,
Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" का निर्माण किया। न्यादर्श के रूप में 100 कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया एवं प्रदत्त संकलन हेतु डॉ. जी.पी. शेरी, डॉ. आर.पी. वर्मा एवं डॉ. पी.के. गोस्वामी द्वारा निर्मित स्वत्व बोध परीक्षण का प्रयोग किया । निष्कर्षतः पाया कि निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा उच्च है।

मुख्य शब्दावली: कामकाजी महिलाएं, बालक–बालिकाएं, स्व–प्रत्यय

प्रस्तावना

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो पर्यावरणीय घटकों का विस्तृत ज्ञान, पर्यावरण तथा मानव के मध्य अन्तर्सम्बन्धों एवं पारस्परिक निर्भरता का ज्ञान और पर्यावरण के प्रति संचेतना का विकास कर पर्यावरण संरक्षण की अभिवृत्ति व कौशल का विकास करती है (गुप्ता और सिंह, 2009)। पर्यावरण शिक्षा यह सिखाने के सुनियोजित प्रयास की ओर संकेत करती है कि किस प्रकार मनुष्य चिरस्थायी अस्तित्व के लिये स्वाभाविक वातावरण की क्रियाओं और विशेषतः अपने व्यवहार और पारिस्थितिक तन्त्र में सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पर्यावरण शिक्षा का प्रयोग प्रायः विद्यालय प्रणाली के अन्तर्गत प्राथमिक से लेकर माध्यमिक शिक्षा के बाद तक दी जाने वाली शिक्षा की ओर संकेत करने के लिये किया जाता है (विकीपीडिया, 2014)। अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक स्रोत संरक्षण परिषद् के नेवादा सम्मेलन में पर्यावरण शिक्षा की व्याख्या करते हुये कहा गया है कि पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव अपनी संस्कृति तथा जैव भौतिक परिवेश के बीच पारस्परिक सम्बन्धों की समझ तथा शोधों का विकास, सम्प्रत्ययों का स्पष्टीकरण, कुशलताओं और अभिवृत्तियों का विकास करता है। यह शिक्षा व्यक्ति की निर्णय प्रक्रिया एवं व्यवहार संहिता में भी अपेक्षित परिवर्तन लाती है मौजूदा ज्ञान और पर्यावरण से सम्बन्धित कार्यक्रमों के अभ्यास में भागीदारी पर्यावरण शिक्षा की विषयवस्तु को विद्यार्थियों के स्थानीय परिवेश से जोड़कर मॉड्यूल्स द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है वे कि सूचनायें खोजने के लिये प्रेरित हों।

परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रेरित करें कि रचनावाद के सिद्धान्तों के आधार पर पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण से विद्यार्थी दी गयी जानकारी को अपने अनुभवों से जोड़ पायें और उन्हें अपने व्यक्तिगत अनुभव व्यक्त करने के अवसर भी प्राप्त हों तथा उपयुक्त क्रियाकलाप के अवसर भी उपलब्ध हों। पर्यावरण से सम्बन्धित खेल, कविता, कहानी आदि के द्वारा शिक्षा को रोचक बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों से उनके अनुभव लिखवाये भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे कार्य भी दिये जा सकते हैं जिन्हें विद्यार्थी व्यक्तिगत के साथ–साथ सामूहिक रूप में भी कर सकें। इस प्रकार विशेष सावधानीयुक्त निर्मित मॉड्यूल्स

के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी अधिगम–प्रक्रिया में सहभागी बन सकेंगे और पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ हो पायेंगे।

समस्या कथन

"कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय का अध्ययन"।

शोध के उद्देश्य

कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं की स्व–प्रत्यय अवधारणा का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है। **शोध विधि**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु **यादृच्छिक न्यादर्शन विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु डॉ. जी.पी. शेरी, डॉ. आर.पी. वर्मा एवं डॉ. पी.के. गोस्वामी द्वारा निर्मित स्वत्व बोध परीक्षण का प्रयोग किया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता द्वारा विश्लेषण एवं व्याख्या के अन्तर्गत स्व–प्रत्यय अवधारणा पर विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं के माध्य, मानक विचलन एवं 'टी' मूल्य का अध्ययन किया गया जिसका विस्तृत विवरण सारणी संख्या 4 (5) 1 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 4.1

कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं की स्व–प्रत्यय अवधारणा के प्राप्ताकों के मध्य सार्थकता के अन्तर की जांच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

	स्मूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'टी' मूल्य	P
बालक	उच्च आय वर्ग	50	32.60	9.15	0.78	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	128	32.69	6.61		
	उच्च आय वर्ग	50	32.60	9.15	2.23	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	72	35.83	5.52		
	मध्य आय वर्ग	128	33.69	5.61	2.61	

	निम्न आय वर्ग	72	35.83	5.52		.05 पर सार्थक
बालिका	उच्च आय वर्ग	50	34.66	5.95	0.79	N.S
	मध्य आय वर्ग	137	35.47	6.95		
	उच्च आय वर्ग	50	34.66	5.95	0.25	N.S
	निम्न आय वर्ग	63	34.30	8.05		
	मध्य आय वर्ग	137	35.47	6.95	1.00	N.S
	निम्न आय वर्ग	63	34.30	8.05		
बालक एवं बालिका	उच्च आय वर्ग बालक	50	32.60	9.15	1.34	N.S
	उच्च आय वर्ग बालिका	50	34.66	5.95		
	मध्य आय वर्ग बालक	128	33.69	5.61	2.31	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग बालिका	137	35.47	6.95		
	निम्न आय वर्ग बालक	72	35.83	5.52	1.28	N.S
	निम्न आय वर्ग बालिका	63	34.30	8.05		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की स्वत्व–बोध अवधारणा में काफी अंतर है। यह अंतर .05 स्पर पर सार्थक है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की स्वत्व–बोध अवधारणा में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .05 स्तर पर है। इसी प्रकार मध्य वर्ग एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा में भी सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह .01 स्तर पर पाया गया है।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व–बोध अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं में मध्य स्वत्व बोध अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं के मध्य स्वत्व बोध अवधारणा में अंतर प्राप्त हुआ है। यह अंतर .05 स्तर पर सार्थक है। अतः पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शून्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शून्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है कि विभिन्न वर्ग की बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा में सार्थक अन्तर है। बालकों के समूह में स्वत्व बोध अवधारणा में मध्य आय वर्ग के बालक उच्च पाए गए तथा निम्न आय वर्ग के बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा औसत पायी गयी किन्तु उच्च आय वर्ग के बालक स्वत्व बोध अवधारणा में निम्न पाए गए।

बालिकाओं के समूह में निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा उच्च पायी गई, उच्च आय वर्ग की बालिकाओं में स्वत्व बोध अवधारणा औसत पायी गयी तथा मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा का स्तर निम्न पाया गया। उच्च आय वर्ग की अपेक्षा निम्न आय वर्ग के बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा काफी उच्च पायी गयी है। इसका सम्भावित मुख्य कारण यह हो सकता है कि निम्न आय वर्ग के बालक अपनी शैक्षिक निष्पत्ति एवं विद्यालयी समायोजन से संतुष्ट हों तथा दूसरा मुख्य कारण यह हो सकता है कि ये बालक अपनी समस्याओं को सुलझाने में सक्षम हैं।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा में सार्थक अन्तर पाए जाने का मुख्य कारण यह हो सकता है कि मध्य आय वर्ग के बालक अपने विचारों में दृढ़ हैं तथा दूसरा मुख्य कारण उनमें आत्म विश्वास अधिक मात्रा में है तथा वे अपना सभी कार्य करने में सक्षम हैं।

बालिकाओं के समूह में उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की अपेक्षा निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा का स्तर उच्च पाया गया इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि इन्हें अपने क्षमता पर पूरा विश्वास है तथा ये विद्यालय के वातावरण में अपने को अच्छी तरह समायोजित कर लेती हैं। इसका दूसरा मुख्य कारण यह हो सकता है कि निम्न आय वर्ग की बालिकाएं अपने मित्र से प्रेषित होकर अपनी आदतों में सुधार कर रही है इससे भी स्वत्व बोध अवधारणा उच्च होती है।

बालक–बालिकाओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालक बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा एक समान है इनमें कोई अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि दोनों आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की सोच एक जैसी हो तथा अपने निर्णय लेने में सक्षम हों और अपनी आदतों एवं व्यवहार से संतुष्ट हों इसलिए इनके विचारों में एकरूपता है। मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा में सार्थक अंतर पाया गया है जो यह इंगित करता है कि मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाएँ अपनी अभिव्यक्ति, आदत एवं विचारों में एक दूसरे से भिन्न हैं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति अथवा विद्यालयी समायोजन बालकों की तुलना में कम अच्छा हो। बालिकाओं की अपेक्षा बालक अधिक गतिशील होते हैं यह भी एक कारण हो सकता है जिससे कि बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा उच्च पायी गयी है। बालकों को अपने निर्णय लेने में स्वतन्त्रता होती है किन्तु बालिकाएं अपने छोटे–बड़े निर्णय के लिए माता–पिता पर निर्भर होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा पर उनके माता–पिता की आकांक्षा एवं विद्यालय वातावरण का प्रभाव है तथा अपने मित्र समूह से अधिक प्रभावित हैं इसी कारण निम्न आय वर्ग के बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा का स्तर औसत पाया गया है तथा निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा उच्च पायी गयी। इससे स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा पर मित्र समूह एवं विद्यालयी वातावरण का अधिक प्रभाव है तथा उसकी शैक्षिक निष्पत्ति उच्च होने के कारण इनकी स्वत्व बोध अवधारणा भी उच्च हो जाती है प्राप्त परिणाम का समर्थन इन शोध साक्ष्यों द्वारा होता है – हेर्वोच, एस. लेविस्टन (1973), मैन्थ्यूल, सी. ट्रुण्डेय (81973), डियो एवं मूलर (81974)।

स्वत्व बोध अवधारणा पर लिंग–भेद, सामाजिक स्थिति एवं मानसिक योग्यता का प्रभाव होता है प्राप्त परिणाम का समर्थन इन शोध साक्ष्यों द्वारा होता है – लारेन्स एवं ब्राउन (1976), आर बसन्ता (1969), बसन्ता, राजकुमार (1971), जी. मोहन्ती (1972, पृ. 380)।

विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा की व्याख्या प्राप्तांकों के आधार पर की गई जिसका विवरण सारणी संख्या 4 (5) 2 एवं 3 में दिया गया है।

सारणी संख्या 4.2

कामकाजी महिलाओं के बालकों की स्वत्व–बोध अवधारणा के अनुसार संख्या का वितरण

क्र.सं.	प्राप्तांक	व्याख्या	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
1	20 या कम	बहुत खराब स्व प्रत्यय	00	00	01
2	21–26	खराब स्व–प्रत्यय	03	19	01
3	27–38	औसत स्व–प्रत्यय	32	87	49
4	39–44	अच्छा स्व–प्रत्यय	14	17	14
5	45 या अधिक	बहुत अच्छा स्व–प्रत्यय	01	05	07
			संख्या = 50	128	72

सारणी संख्या 4(5)2 से यह स्पष्ट उच्च आय वर्ग से 01, मध्य आय वर्ग से 05 एवं निम्न आय वर्ग से 07 बालकों की स्वत्व बोध अवधारणां बहुत अच्छी है। उच्च आय वर्ग से 14, मध्य आय वर्ग से 17 एवं निम्न आय वर्ग से 14 बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा अच्छी पायी गयी। उच्च आय वर्ग से 32, मध्य आय वर्ग से 87 एवं निम्न आय वर्ग से 49 बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा औसत पायी गई। उच्च आय वर्ग से 03, मध्य आय वर्ग से 19 एवं निम्न आय वर्ग के 01 बालक की स्वत्व बोध अवधारणा खराब पाई गयी। इसी प्रकार निम्न आय वर्ग से 01 बालक की स्वत्व बोध अवधारणा बहुत खराब पाई गयी।

बालकों की भांति की विभिन्न वर्ग की बालिकाओं की भी स्वत्व बोध अवधारणा की व्याख्या प्राप्तांकों के आधार पर की गई है। जिसका विस्तृत विवरण सारणी संख्या 4.3 में दिया गया है।

सारणी संख्या 4.3

कामकाजी महिलाओं के बालिकाओं की स्वत्व–बोध अवधारणा के अनुसार संख्या का वितरण

क्र.सं.	प्राप्तांक	व्याख्या	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
1	20 या कम	बहुत खराब स्व प्रत्यय	06	04	02
2	21–26	खराब स्व–प्रत्यय	06	10	10
3	27–38	औसत स्व–प्रत्यय	21	73	31
4	39–44	अच्छा स्व–प्रत्यय	13	43	13
5	45 या अधिक	बहुत अच्छा स्व–प्रत्यय	04	07	07
			संख्या = 50	137	63

सारणी संख्या 4.3 से यह स्पष्ट है कि उच्च आय वर्ग की 04, मध्य आय वर्ग की 07 एवं निम्न आय वर्ग की 07 बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा बहुत अच्छी है। उच्च आय वर्ग की 13, मध्य आय वर्ग की 43 एवं निम्न आय वर्ग की 13 बालकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा अच्छी है। उच्च आय वर्ग की 21, मध्य आय वर्ग की 73 एवं निम्न आय वर्ग की 31 बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा औसत पाई गई। उच्च आय वर्ग की 06, मध्य आय वर्ग की 10 एवं निम्न आय वर्ग की 10 बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा खराब पायी गई। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग के 06, मध्य आय वर्ग के 04 एवं निम्न आय वर्ग के 02 बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा बहुत खराब पई गई।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा को प्रभावित करने वाले मुख्य कारण मित्र समूह, विद्यालयी वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति एवं मानसिक योग्यता है इन चरों के प्रभाव के कारण ही निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा उच्च पाई गयी।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा को प्रभावित करने वाले मुख्य कारण मित्र समूह, विद्यालयी वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति एवं मानसिक योग्यता है इन चरों के प्रभाव के कारण ही निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की स्वत्व बोध अवधारणा उच्च पाई गयी।

सन्दर्भ

- डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे, (2007), शिक्षा की समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- मगंल, एस. के., (2009) शिक्षा मोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग। प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- पाठक, आर. पी. (2011). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन, दिल्ली ।
- राय, गीता (2011). अधिगमकर्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
- गुप्ता, डा. एस. पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
- पाण्डेय, डा. के. पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006
- सुखिया, एस. पी. तथा मल्होत्रा वी. पी. शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- तिवारी, डा. गोविन्द शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधर, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- सिंह ए. के. शिक्षा में अनुसन्धान, पोइन्टर पब्लिशर्स, 2005
- पाण्डेय, के.पी. शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अमिताश प्रकाशन, मेरठ
- कपिल, डा. एच. के. सांख्यिकी के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- गिलफोर्ड, जे.पी. फन्डामेन्टल स्टैटिस्टिक्स इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, 1982
- लट्टा, ललित (2001), 'महिला विकास योजनाएँ और उनका क्रियान्वयन', कुरूक्षेत्र नवम्बर 2001।
- वर्मा, जदुनाथ प्रसाद (2002), ग्रामीण उन्मूलन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका, कुरूक्षेत्र, दिसंबर 2002।
- सेतिया, सुभाष (2004), बदलती आर्थिक परिस्थितियों के बीच ग्रामीण महिलाएँ, कुरूक्षेत्र, जुलाई 2004।